मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीय गुणाब्धये।
चक्रवर्त्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम्॥
दवेदान्त वेद्याय मेघश्यामल मूर्त्तये।
सां मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम्
श्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः।
ाग्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम्
तृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया।
नन्दिताखिल लोकाय रामभद्राय मङ्गलम्

श्रीयुगल अष्टयाम सेवा

त्यक्त साकेतवासाय चित्रकूट विहारिणे।
सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदयाय मङ्गलम्॥
सौमित्रणाचजानक्याचापवाणासिधारिणे
संसेव्यायसदाभक्त्यास्वामिनेममङ्गलम्
दण्डकारण्यवासाय खरदूषणशत्रवे।
गृद्धराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तुमङ्गलम्
सादर शवरीदत्त फलमूलाभिलाषिणे।
सौलभ्य परिपूर्णाय सत्वोद्रिक्ताय मङ्गलम्

श्रीराम

नाथाय मङ्गलम्॥
नाथाय मङ्गलम्॥
ताायास्तु मङ्गलम्॥
करोतुमङ्गलंसदा॥

श्रीराम

हनुमत्समवेताय श्रीमते रघुवीराय विभीषण कृते प्रीत्या श्रासाद्य नगरी दिव्या

श्रीराम

ब्रह्मादिदेवसेव्याय ब्रह्मण्याय महात्मने। जानकीप्राण नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम्॥
श्रीसौम्यजामातृमुनेः कृपयाऽस्मानपैयुषे। महते मम नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम्॥
मङ्गलाशाशनपरैर्मदाचार्य पुरोगमैः। सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृताय मङ्गलम्॥
रम्यजामातृ मुनिना मङ्गलाशासनंकृतम्। त्रैलोक्याधिपतिः श्रीमान् करोतुमङ्गलंसदा॥

अथ युगल अष्टयाम सेवा

श्लो०— मिथ्यासम्बन्धगन्धेन बद्धो भवति मूढ़धीः ।
सत्यसम्बन्ध बन्धेन बद्धा भवति शुद्धधीः ॥

दोहा—श्रीवल्लभ[1] आचार्यवर मुनिवर रामाचार्य ।
मम श्रीगुरु पर्यन्त लों बन्दो सब आचार्य ॥
श्री पवन तनय आनद घन, सुमिरत सब सुख दानि ।
अष्टयाम बार्तिक रचौं, सकल सुमंगल खानि ॥

प्रथम साधक तीन घड़ी रात्रि उठै स्नानादिक क्रिया करि वाह्यांभ्यंतर शुद्ध होइकै युगल नाम मंत्रादि जप करै । युगल संवादि किञ्चित पाठ करके श्री अयोध्याजी का स्वरूप उपवन बनराज श्री प्रमोद बन शहर पनाह के कोट के चारों तर्फ दृष्टि में लावै कोट के नीचे खाई श्री सरयूजी में लगो है जल पूर्ण है । कोट के चारि दरवाजे अति बिचित्र

हैं। भीतर वासिन और रघुबंशिन के महल एक वार सबपर दृष्टि करि खास महल सात आवर्ण-रंग महल जाको शास्त्रन में लेख है ताके मध्य श्री कनक भवन सजान कुंज है जेाह के मध्य श्री लाड़िलो लाल जू शयन क्रीड़ा करते हैं। तामें दृष्टि देके उत्तर भाग में दूसरा आवर्ण श्री चंद्रकला जू का महल ताके उत्तर भाग में अपने महल में अपना रूप देखै अपनी बाह्य वृत्ति भुलाय यह जानै जो हमारो तीन दासो हैं—सुरुचि १ सुमति २ इच्छा ३ सोइ जगायन हैं अपना स्वरूप का शृंगार तीनों दासियों ने कियो है सो विचारि के अपने स्वरूप ते थार तीन सजै अतरदान पानदान गुलाब पास-मेवा एक में औ पकवान एक में चंदन पुष्प सजि के तीनों दासिन के हथ लैके श्री चद्रकला जू की सेवा शृंगार कछू करिके श्री चंद्रकला जू के साथ तीन हजार सहचरीन का यूथ तिनकी यूथेश्वरो श्री चंद्रकला जू के संग शयन कुंज में प्राप्त होय के श्री जी को आज्ञा पाय शयन किये हैं तहाँ मधुर वानी

ते चरण पलोटि के जगावैं। पलंग पर तीन तरफ तकिया लगाय के बैठावैं भूषन बसन सुधारि के छवि देखि सनाथ होवैं अलसाये जो युगल सरकार तिनके पलंग के निकट पूर्व युगल चौकी धरैं यथा काल बिछौना तकिया लगाय के पलंग ते विनय करिके चौकी पर बैठाय के दंतधावन युगल मुख दैके कोऊ जल देती हैं कोऊ पट ते मुख पोछतो हैं। पश्चात् भूषण बसन पोसाक सज देती हैं। वो अपने रूप से सजैं कँचनमणि का जराऊ ताज लाल जू के और शीसफूल आदि श्री किसोरोजी के शृंगार रुजि मंगल भोग प्रीतिते पवावैं। दधि मिश्री बतासा बर्फी पेड़ा मलाई आदि पुनः गान तान मृदंगादि वाद्य पूर्वक आरती मंगला सजैं धूप दीप कारि के भोर होत मंगला आरतो परमानन्द भई पश्चात् शयन कुंज के दर दालान में युगल परस्पर फुलेल लगाय के उवटन सुगंधमय युगल अंग में लगावै अंग अंग स्पर्श में परम सुख सर्वदा अनुकूल प्राप्त करिके युगल चौको पर युगल सरकार को श्री सरयूजो के

सुगंध मिश्रित जल सों चारो तरफ श्री चंद्रकला-दिक सहचरी गान तान पूर्वक स्नान कराके पट ते अंग पोछि के वाल सुखाय के नीलाम्बर पीताम्बर पहिराय के दर दालान के भीतर श्रृंगार कुंज में तिलक शिंदूरादि विचित्र रचि के भूषन किरोट मुकुट कुंडल कंठा कोस्तुभ गुंजादि कंकणादि श्री लालजू को सजे और चंद्रिका टीका वेंदो दुलरी कंठपोत चंपकली पंचलरी पायजेबादि श्री किशोरी जू के श्रृंगार सजि के श्रृंगार भोग करि पूरी कचौरी पापर वूंदी रायता और तरकारो फल मेवा समय अनुकूल श्रृंगार भोग जाको वाल भोग कहते हैं। सोई श्रृंगार भोग पवाय आचमन कराय पट परसाय धूप दीप करि आरती श्रृंगार मनियन कुंज में नृत्य गान बाद्य पूर्वक करिके चौपरि सतरंज खेलि के ताम्बूल मुसुकानि पूर्वक देइ बोलनि मिलनि की झांकी चित में धरै युगल छबि आनिकै कृतारथ होय कबहूँ मंगल आर्ती के पीछे श्रो सरयू तट स्नाान श्रृंगार भोग आरती नाव ही पर होय के रंगमहल तट पर जाय

के एक अंग में शीशमहल है, तामें जहां रुचि तहां विराजे सब तैयारो सामग्री जलपान मेवा फूल तब तक पहर दिन आयो तब दो घड़ी सखिन के कुंज में आवते भये तहां जिनके कुंज में युगल सरकार जाते हैं सो अपने को धन्य मानि पूजन भोग आरती मय समाज के करि गान सुनाय के साथ साथ फिरतो हैं तब तक जिवनार के समय भयो कोट के पूरब किनार के महल के पश्चिम मध्य वन में भोजन कुंज तामें भीतर जिवनार राजभाग को तैयारी करै तहां श्री युगल सरकार कनकमणि जटित पीढ़ा पर बैठे पश्चात आज्ञा पाय युगल मुख में कौर सजिके देती हैं अष्ट सखी दो सखी दोऊ मुख में दाल-भात और दो सखी तरकारी देतो हैं दो मिलि बड़ा-बरी कढ़ो और दो रायता ऐसही अष्ट सखी निकट बैठि युगल मुख में सुधारि कौर देतो हैं कबहूँ अपने हस्त परस्पर पावते हैं। कबहूँ लाल जू किशोरो जू के मुख में कबहूँ किशोरी जू लालजू के मुख में मद मुसकानि पूर्वक पवावते हैं यह आनन्द साधक

पूर्वक श्री चद्रकलाजू रासलीला सजती भईं। कबहूँ सरयू तट रङ्ग महल मध्य कबहूँ अशोक बाटिका के रङ्ग महल में कबहूँ शोम बट तर जहाँ रत्नागिरि का प्रकाश है याही प्रकार के रसिक महात्मा मुनिन के लेख पाय के लिखा है अर्ध रात्रि पर्यंत रास होता है मध्य में रास भोग आरतियाँ अत में व्यारू पश्चात् शयन भोग शयन आरती करिके शयन कुंज श्री युगल सरकार शयन किये यह सुख में चित दिये अनन्त सुख प्राप्ति करैं श्री चन्द्रकलाजू अथवा सद्गुरु निजरूप की आज्ञा पाय युगल चरण सेवन करैं सद्गुरु निज-रूप की सेवा करि अपन कुंज में आ नि याही सुख में शयन करि आनन्द करैं। इति श्री स्वामी जीवा-रामजीकृत उपनाम जुगुलप्रियाजी कृत अष्टयाम सेवा समाप्तम्॥ शुभ स्थान चिरान छपरा॥

यह अष्टयाम सेवा विनासम्बंध लिये हुए मनुष्यों को नहीं बताना सुनाना चाहिये। (मंत्र यत्नेन गोपयेत्)